P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-8* April- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

प्रेम जनमेजय : व्यंग्य के स्वाभाविक प्रहारक

सारांश

प्रेम जनमेजय की रचनाएँ सशक्त विचार पक्ष के साथ शोषित के पक्ष में खड़ी होकर दिशा प्रदान करती है। 21वीं सदी में रेखांकित विसंगतियों को नये कोण से देखकर संक्रान्ति काल में वह मनुष्य होने के अहसास को मनुष्य के बरक्स रखकर मुद्दों को गहराई से देखती है। मूल्य प्रतिबद्धता के मद्देनजर वे अपने सृजनात्मक जीवन में डूबकर मनुष्य गढ़ने के उपक्रम की शुरूआत करते हैं।

सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक स्थितियों की विद्रूपताओं और विसंगतियों में व्यंग्य लेखन की सार्थकता को तलाष कर वैज्ञानिक युग के महत्त्वपूर्ण परिवर्तनों को रेखांकित करना उनका साहित्यिक धर्म है। परम्परा और आधुनिकता में सामाजिक उत्थान की छटपटाहट उनकी रचनाओं का मूल स्वर है। वस्तुतः उनकी व्यंग्य लेखन यात्रा, सामाजिक जिम्मेदारी, नैतिकता, मानवीय दृष्टिकोण की पक्षधर बनकर राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानते हुए मानवीयता के हित में निरन्तर प्रहारक शक्ति प्रयोग द्वारा कटिबद्ध है।

सुशीला
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
श्रीगंगानगर, राज.

मुख्य शब्द : उपभोक्तावाद, सृजनात्मक जीवन, मानवीय मूल्य, रचनात्मक औजार, बाजारीकरण, प्रतिबोध

प्रस्तावना

"हमारी सदी समाज का मुक्ति भंजक समय है। श्रद्धा विकलांग हो चुकी है और आस्था के राजपथ अविश्वास की पगडंडियों में बदल चुके हैं। कथनी–करनी का भेद, विसंगतियाँ, व्यवस्था से मोहभंग आदि में, थोक में कच्चा माल उपलब्ध है।"[1]

21वीं सदी में जहाँ उपर्युक्त परिच्छेद में रेखांकित विसंगतियों की भरमार है। ठीक उसी तरह 21वीं सदी के पहले दशक के व्यंग्यकारों ने अपने व्यंग्य लेखन में इन विसंगतियों पर जमकर प्रहार किए हैं। हमारे समय के प्रख्यात व्यंग्यकार प्रेम जनमेजय की कमल की नोक से निकले व्यंग्यों से ना तो भ्रष्टाचार बचा है, ना विसंगतियाँ, ना राजनैतिक पैंतरेबाजी को उन्होंने बख्शा है तो ना ही विषमताओं को। इसी तरह उपभोक्तावाद, शिक्षा का वर्तमान स्तर और अर्थव्यवस्था भी प्रेमजनमेजय के व्यंग्य के प्रिय विषय रहे हैं।

"मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता, विसंगतियों की गहरी पकड़ और सशक्त अभिव्यक्ति एक अच्छे व्यंग्यकार की पहचान है। प्रेम के पास एक व्यापक जीवन दृष्टि है।"[2] यही जीवन दृष्टि प्रेम जनमेजय को अलग खड़ा करती है। व्यंग्य के रचनात्मक और व्यंग्यात्मक पक्ष को वे गहराई तक देखने में सक्षम हैं। उनमें समाज निर्माण को लेकर एक चिंता और चितन स्पष्ट देखा जा सकता है– प्रतिबद्धता की सीमा तक। वे सहज रूप से विद्रूपताओं और विसंगतियों को अपने व्यंग्य में इस कदर जगह देकर पाठक को परोसते हैं कि वह भी उसी सहज भाव से इस पर सोचना शुरू कर देता है। सुभाष चंदर प्रेम जनमेजय की इसी सहजता को विशेष रूप से रेखांकित करते हैं– "प्रेम का कथाकार स्वरूप तुलनात्मक दृष्टि से प्रभावी है। उनके लेखन में प्रसंग– वक्रता है, इसलिए स्थितियों से व्यंग्य उपजाने में वह कहीं अधिक सहज दिखाई देते हैं। यही कारण है कि वह अपनी व्यंग्य कथाओं 'धोबी के कुत्ते', 'कन्हैया राजा होली खेले', 'वसो सदा पश्चिम विहारै' में अपनी उपस्थिति का सशक्त अहसास कराते हैं। 'धोबी के कुत्ते' में मानवीय मूल्यों की गिरावट पर उनकी चिंता जायज लगती है। .... 'कन्हैया राजा होली खेले' में उन्होंने फैंटेसी के माध्यम से राजनैतिक हल्कों की वोट केंद्रित हलचल पर करारा व्यंग्य किया है।"[3] इस तरह से मूल्यों के अवमूलन, गिरते राजनैतिक स्तर और असमानता तथा विद्रूपताओं पर जबरदस्त प्रहार करते हुए इन्होंने व्यंग्य को एक सार्थक और रचनात्मक औजार के रूप में प्रयोग किया है– एक ऐसे औजार के रूप में जो समाज को सजग, सचेत और सावधान करने का कार्य बखूबी करता है, बिना किसी दबाव और हिचक के।

शोध का उद्‌देश्य

1. राजनीति, धर्म, प्रेम, शिक्षा, जाति, मानव सम्बन्धों के जटिल संसार को लेखक रचनात्मक स्वरूप द्वारा गम्भीर बहस हेतु तैयार करना है।
2. विसंगतियों से बढ़ती सार्थक व्यंग्य लेखन की सम्भावनाओं के साथ व्यंग्यकार की भूमिका एवं प्रतिबद्धता तय करना। इस भूमिका में सक्रियता को चुनौती के रूप में स्वीकार कर, सृजनात्मक, क्रियाशीलता, साहित्यिक गुणवत्ता, समाज एवं राष्ट्रहित जैसे साहित्यिक धर्म को रेखांकित करना।
3. पारिवारिक, सामाजिक विसंगतियों, कुचक्रों, असमानताओं, सांस्कृतिक आधारों पर जनमेजय के व्यंग्य लेखन सकारात्मक राय को पुष्ट करना।

व्यंग्य सामाजिक आवश्यकतानुसार अपनी भूमिका के साथ उपस्थित होता रहा है। प्रेम जनमेजय समाज की आवष्यकता की पूर्ति अपने व्यंग्य लेखन से निरन्तर करते रहे हैं। उनमें सामाजिक निर्माण की एक छटपटाहट हमेशा मौजूद देखी जा सकती है। वे व्यंग्य की परम्परा को बखूबी ना सिर्फ निभा ही रहे हैं बल्कि उसे एक ऊँचाई प्रदान कर रहे हैं। प्रेम जनमेजय ने जब लिखना शुरू किया तो परसाई, जोशी, शुक्ल और त्यागी हमारे समय की विसंगतियों को सामने ला चुके थे। प्रेम ने उस प्रक्रिया को आगे बढ़ाया है। एक प्रकार की सामाजिक जिम्मेदारी, जो उनके अग्रणी रचनाकारों में दिखाई देती है, आज के समय में जो इसे कविता में कहना चाहते हैं, कहानी में कहना चाहते हैं, उसे प्रेम ने साफ–साफ व्यंग्य में कहा है। डॉ. मनोज श्रीवास्तव का यह कथन जनमेजय के व्यंग्यों में उनकी जिम्मेदारी को और अधिक पुष्ट करता दिखाई देता है– "यह बात प्रेम जनमेजय पर पूरी तरह खरी उतरती है कि यहां की सामाजिक पृष्ठभूमि ने ही उन्हें व्यंग्यकार बनने के लिए विवश किया है। तभी तो उनकी आरम्भिक काव्य रचनाओं और कहानियों में व्यंग्य का स्वर प्रधान है। जब उनमें व्यंग्य का यह स्वर अत्यंत अभिमानी हो गया तो उनकी रचनाधर्मिता एक विषुद्ध व्यंग्यकार के रूप में कायांतरित हो गई।"[4] प्रेम जनमेजय जिस तरह राजनीति, भ्रष्टाचार, सामाजिक विसंगतियों को अपने व्यंग्य लेखन में रेखांकित करके समाज को सचेत करते रहे हैं। उसी तरह बाजारीकरण ने समाज और अर्थव्यवस्था सहित समाज से जुड़े अनेकानेक घटकों को किस हद तक प्रभावित किया है उसे भी उन्होंने संजीदगी से अपने व्यंग्य में उतारकर इनके खतरों से आगाह किया है। डॉ. अजय अनुरागी के शब्दों में "एक वाक्य में कहा जाए तो प्रेम जनमेजय की व्यंग्य लेखन यात्रा में व्याप्त आर्थिक विसंगतियों एवं सांस्कृतिक प्रदूषण की स्थितियों परिस्थितियों से सजी एक व्यंग्यकार की यात्रा है, जिसके अन्तर्गत पूंजी की दौड़ में टूटते मूल्यों, छूटती नैतिकता, पसरती फूहड़ता, बिखरती सामाजिक संरचना, दिखावे का आडम्बर, ठगी के मानवीय पहलू, ढोंग के नए–नए आविष्कार आदि का घटा टोप है।"[5]

प्रेम जनमेजय के व्यंग्य के निशाने पर आने से शायद ही कोई विसंगती बच पायी है। चाहे वे टूटते सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्य हो या समाज को अपने बाहुपाष में जकड़े हुए आडम्बर। छिन्न–भिन्न हुई अर्थव्यवस्था हो या बाजार की चकाचौंध में भ्रमित आम और खास आदमी। साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक आदि तमाम क्षेत्रों की पीड़ा को व्यंग्य के माध्यम से प्रेम जनमेजय ने हर आम–और – खास से रू–ब–रू करवाकर एक सजग व्यंग्यकार होने के अपने धर्म का बखूबी निर्वाह किया है। इस व्यंग्यकार ने सज्जन और दुर्जन के वर्तमान स्टेटस को किस तरह से अपने व्यंग्य में वर्णित किया है। अजय अनुरागी के शब्दों में "व्यंग्यकार इस निष्कर्ष पर भी पहुँचता है कि 'कलियुग में जो दुष्ट है, उसी को सुखी रहने का अधिकार होना चाहिए' या दूसरे शब्दों में कहें तो आजकल दुष्टों को ही आलीशान होने का अधिकार है।"[6] व्यंग्यकार की यह पीड़ा सतही नहीं बल्कि उन्हें अंदर तक सालती नजर आती है, जो यह प्रमाणित करती है कि समाज जो दिखा रहा है उसकी वास्तविक स्थिति वह नहीं बल्कि ठीक इसके विपरीत है। ठीक इसी तरह डॉ. वेद प्रकाश अमिताभ ने अपने आलेख 'व्यंग्य के प्रेम में प्रजातंत्र' नाम आलेख में प्रेम जनमेजय द्वारा रेखांकित प्रजातंत्र की विसंगतियों का बेहतरीन वर्णन किया है– "व्यंग्यकार ने दर्शाया है कि इस प्रजातंत्र में सबसे बुरी स्थिति 'प्रजा' की है। चुनाव के समय प्रजा का महत्त्व कुछ दिनों के लिए अवश्य बढ़ जाता है। 'आग लगन्ने झोंपड़ा' में इस विडम्बना को इन शब्दों में कहा गया है– जब–जब देश में धर्म की हानि होती है और देश त्राहि–त्राहि कहता है.... झोंपड़ों में उपस्थित देवताओं को प्रसन्न करने के लिए उन्हें मदिरा स्नान कराया जाता है, भोग लगाया जाता है और कहीं–कहीं इनकी झाँकियाँ भी निकाली जाती है। चुनाव समाप्त होते ही देवताओं का देवत्व समाप्त हो जाता है और देश–सेवक अपनी–अपनी राह होते हैं। एयरकंडीशंड कमरों में झोंपड़ों के दर्द का हिसाब करते हैं।"[7] व्यंग्य लेखक ने अपने इस व्यंग्य में निर्भय होकर प्रजा, प्रजातंत्र और नेताओं की भूमिका को अपने व्यंग्य में विशेषकर नेताओं के चरित्र का सटीक चित्रण किया है, जो यह बतलाता है कि नेता लोग घोर स्वार्थी किस्म के प्राणी हैं, जिन्हें ना प्रजा से मतलब है और ना ही प्रजातंत्र से। बस उनकी नजर में प्रजातंत्र के मायने एक ही दिन होते हैं जिस दिन मतदाता सरकार चुनने के लिए अपना मत देते हैं और उसके बाद वह पूरें पाँच साल भ्रम और उम्मीद में जीने को अभिषप्त रहता है। प्रेम जनमेजय ने नेताओं द्वारा प्रजातंत्र को एक तरह से मजाक बना देने की इस 'प्रक्रिया' को अपने व्यंग्य की धार में बखूबी उतारा है।

प्रेम जनमेजय ने भ्रष्ट आचरण और रिश्वत जैसी लाईलाज बीमारी को भी नए ढंग से रेखांकित करते हुए अपने व्यंग्य को नई ऊँचाई प्रदान की है। रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार जो आज इस देष में शिष्टाचार का रूप लेते जा रहे हैं, को इस व्यंग्यकार ने निशाना बनाते हुए नए ढंग से अपने व्यंग्य में उतारा है– "गलत कुछ नहीं है, जो तुम करोगे देश और पार्टी के लिए करोगे, रिश्वत खाओगे तो देश के लिए। उपहार लोगे तो पार्टी के लिए, तुम अपने समस्त कार्य इसके नाम अर्पण कर दो। इसकी चिंता मत करो कि तुम गलत कर रहे हो या सही, इसकी

चिंता तो जनता करती है। अतः हे अर्जुन, इससे पहले कि और लोग दीमक बनकर इस देश को चाट लें, तुम हड़प जाओ।"[8]

प्रेम जनमेजय के समकालीन व्यंग्यकारों का मानना है कि प्रेम को व्यंग्य की महीन समझ के साथ–साथ प्रेम को दुनिया और दुनियादारी की भी बेहतर समझ है। शायद यही कारण है कि प्रेम ने जीवन के अनेक क्षेत्रों के साथ–साथ जीवन पर, विशेषकर मध्यवर्गीय जीवन और उसके संदर्भ में अपनी कलम चलाई है। इस बारे में प्रख्यात व्यंग्यकार ज्ञान चतुर्वेदी लिखते हैं– "प्रेम ने मध्यवर्गीय जीवन के शाश्वत जीवन संघर्ष में आने वाले विषयों पर खूब लिखा है। मध्यवर्गीय जीवन की विसंगतियों, संघर्षों, टुच्चेपन, टूटते जीवन मूल्यों, आपाधापी तथा अपनी आकांक्षाओं का अपने तरीके से खाका खींचा है। वैसे प्रेम की व्यंग्यकार वाली निगाह सब तरफ पड़ती है– राजनीति, प्रेम, धर्म, शिक्षा, जाति, दफ्तर के खौफनाक जंगल, मानव सम्बन्धों के जटिल संसार, दाम्पत्य का खट्टा–मीठा जीवन– कोई जीवन नहीं बचा है। जहाँ देखिए प्रेम जनमेजय पीछे खड़े हैं। इन विषयों पर प्रेम जनमेजय के लिखने के स्टाइल आदि पर बहस की गुंजाइश हैं, पर उनकी व्यंग्य दृष्टि पर बहस की या विवाद की कोई गुंजाइश नहीं है।"[9]

निष्कर्ष

निसंदेह प्रेम जनमेजय व्यंग्य के स्वाभाविक प्रहारक हैं। व्यंग्य लेखन के प्रति उनकी तन्मयता व्यंग्य विधा को पूरे समाज के लिए विशिष्ट बनाती है। इनकी यही विशिष्टता, भ्रष्टाचार, कथनी–करनी के अन्तराल एवं स्खलनों के बारे में समाज में पूर्वबोध होते हुए भी नए दृष्टिकोण से व्यंग्य रचना में प्रतिबोधित होने लगती है। जनमेजय इसी प्रतिबोध की दिशा में सक्रिय होकर भाषा की स्वाभाविक गति से प्रेरणाएँ उपलब्ध करवाने में माहिर हैं। वे भाषानुकूलता, सामाजिक–सांस्कृतिक बोध एवं संवेदना के सच्चे वाहक बनकर ईमानदार आलोचक पैदा करने में सफल हुए हैं। व्यंग्य उनके लिए प्रहारात्मक हथियार है जो विसंगतियों पर आक्रमण करने के साथ–साथ सृजनात्मकता के साथ समाज के महत्त्वपूर्ण विषयों पर सोचने को बाध्य करते हुए नैतिकता एवं सामाजिक यथार्थ के साथ जोड़कर सामाजिक परिवर्तन का शंखनाद करता है। इस आधार पर यह प्रामाणिक तौर पर कहा जा सकता है कि प्रेम जनमेजय ने जीवन के हर क्षेत्र को अपनी कलम की धार से व्यंग्य यात्रा को नापा है। जीवन के संघर्ष, भ्रष्टाचार, राजनीति, धर्म, संस्कृति, मध्यवर्गीय जीवन की विसंगतियों, प्रजातंत्र, आडम्बर, ढोंग, मूल्यों का अवमूलन, चुनाव, बाजार, उदारवाद आदि शायद ही ऐसा कोई क्षेत्र रहा है जिसे प्रेम जनमेजय ने अपने व्यंग्य का विषय बनाकर आम और खास को सचेत–सजग नहीं किया हो। ये सब स्थितियाँ–परिस्थितियाँ इस बात को पुख्ता करती हैं कि अपनी कलम के साथ प्रेम जनमेजय अपने सामाजिक दायित्व का निर्वहन शिद्दत के साथ कर रहे हैं न कि तटस्थ रहकर इस तरह की घटनाएँ–दुर्घटनाएँ देखना उनकी फितरत में है। वे कहीं इन विसंगतियों पर हथौड़ा बनकर चोट करते हैं तो कहीं आलपिन बनकर चुभते हैं। व्यंग्य यात्रा को सहज गति से नापने वाले प्रेमजनमेजय व्यंग्य के स्वाभाविक प्रहारक हैं इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *गोपाल चतुर्वेदी, 'परिस्थितियों और मानवीय विवषता का व्यंग्य', पेज–18, कल्पान्त–अक्टूबर, 2010*
2. *वही, पृ.सं. 19*
3. *सुभाष चन्द्र, 'गंभीर व्यंग्य की कड़ी में' पृ.सं. 25, कल्पान्त–अक्टूबर, 2010*
4. *डॉ. मनोज श्रीवास्तव, 'जनमेजय सामाजिक घटनाओं के राडार हैं', पृ.सं. 11, हिन्दी चेतना, अक्टूबर–दिसम्बर, 2011*
5. *डॉ. अजय अनुरागी, 'व्यंग्य के दिषायुक्त प्रहारक प्रेम जनमेजय, पृ.सं. 59, हिन्दी चेतना, अक्टूबर–दिसम्बर, 2011*
6. *वही, पृ.सं. 61*
7. *डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ, 'व्यंग्य के फ्रेम में प्रजातंत्र', पृ.सं. 77, हिन्दी चेतना, अक्टूबर–दिसम्बर, 2011*
8. *महेष दर्पण, 'सरापा व्यंग्यकार है प्रेम', पृ.सं. 57, हिन्दी चेतना, अक्टूबर–दिसम्बर, 2011*
9. *ज्ञान चतुर्वेदी, 'मुझे अपनी इस मित्रता पर गर्व है,' पृ. सं. 55, हिन्दी चेतना, अक्टूबर–दिसम्बर, 2011*